।। ओ३म् ।।

बीति ताहि बिसार दे आगे की सुध लेय

(निराशा में आशा की किरण)

लेखक

यशपाल आर्य

क - पश्चिमी सम्भाग समिति - आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरांचल

- आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग (धामावाला) देहरादून

(जनहितार्थ- प्रकाशित तथा प्रसारित)

आठवाँ परिवर्धित संस्करण

ओ३म्

परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन यातिवंश समुन्नतीम्।।

★ 5 जून 1926 को सोलन हिमाचल प्रदेश के एक सम्भ्रान्त वैश्य परिवार में जन्मे - "दून रत्न" श्री देवदत्त आर्य के जीवन का स्वर्णिम अधय 13 सितम्बर 2002 को पूर्ण हो गया।

★ 2 दिसम्बर 1934 को देहरादून के सम्भ्रान्त वैश्य परिवार में जन्मी श्रीमती विमला देवी के जीवन का सूर्य 25 जून 2006 को अस्त हो गया।

हर्षवर्धन आर्य　　　　आदित्य वर्धन आर्य

ओ३म्

बीति ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय

भीष्म पितामह का समस्त शरीर वाणों से छलनी हो चुका था। रूधिर की धार बह रही थी, फिर भी पितामह शरशैया पर शान्त भाव से लेटे थे। ''पितामह! आपने जीवन में बहुत कुछ देखा है, धर्म के मर्म को आपने समझा है। अब आपका अन्तिम समय आ गया है, हमें धर्म का उपदेश दीजिए। वह मार्ग बताइये जिस पर चलकर हमारा जीवन सुखमय हो जाय और दूसरे जीवन में भी हम सत्पथ के पथिक बन सकें।'' पाँडवों की इतनी विनम्र प्रार्थना से पितामह पिघल गए। धर्म का उपदेश देने लगे और प्रश्नों के उत्तर भी।

सहसा बड़े जोर का ठहाका गूँज उठा। एकत्र हुए सब जन भौचक्के से रह गए। तब भीष्म कर्कश वाणी में बोले, ''कौन है जिसने यह अट्टहास किया है? ठहाका मारकर हँसने वाले को क्या यह भी ज्ञान नहीं कि जब धर्मचर्चा चल रही हो, कई लोग सुन रहे हों तो इस प्रकार खिलखिलाना असम्भ्यता है? कौन है वह? तब एक नारी-कण्ठ उभरकर आया, बाबा! मैं हूँ आपकी पुत्र-वधु द्रौपदी। यह हँसी मेरी थी। बेटी! तू तो विदुषी है, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र की पण्डिता है। तूने यह अनुचित कार्य कैसे कर डाला? तुझे तो नहीं हँसना चाहिए था।''

द्रौपदी ने बड़े विनम्र शब्दों परन्तु दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया, ''पितामह, आपको ध्यान होगा, एक दिन भरी सभा में दुर्योधन ने मुझे अपमानित किया था। उस दिन सभा में आप भी उपस्थित थे, आचार्य द्रोण भी उपस्थित थे, कृपाचार्य भी थे और वे सब लोग उपस्थित थे जो धर्म-धुरीण और धर्म के आधार समझे जाते हैं। मैं विवश थी। अत्याचारियों के पंजे में थी। मैं चीखी, चिल्लाई, गिड़गिड़ाई। मैंने नाम ले लेकर एक एक को सहायता के लिए पुकारा, 'बाबा, मेरी लाज बचा लो, मैं तुम्हारी पुत्रवधु हूँ, तुम्हारी बेटी के समान हूँ।'' मेरा रुदन राजप्रासाद की जड़ भित्तियों से टकाराता रहा। न कृपाचार्य उठे, न द्रोणाचार्य ने संभाला और बाबा, आप भी मुँह में घुंघचिया डालकर मौन बैठे रहे और आज जब काल ने आपके द्वार को

खटखटाया है, यमराज के ठंडे हाथों ने जब आपको जंजीरों में जकड़ लिया है, तब आपको धर्मोपदेश सूझा है। मुझ अबला के लिए उस दिन राजदरबार में क्यों नहीं फूटा था? आज मुझसे पूछा जा रहा है कि तू क्यों ठहाके मार रही है? यह असभ्यता है। बाबा! मैं तो आज जी खोलकर अट्टहास करूँगी। धर्म के नाम पर आपका यह समस्त आचरण स्वयं में एक ठहाके से कुछ कम है क्या?'' सब श्रोता स्तब्ध रह गये, पत्थर की मूर्ति से अवाक्।

अन्ततः पितामह ने ही मौन तोड़ा, ''बेटी, तू सत्य कहती है। तू ठीक कहती है। मैं उस समय तेरी कुछ भी सहायता करने में असमर्थ था। जो जैसा अन्न खाता है, उसका वैसा मन हो जाता है। राजा दुर्योधन का पाप का अन्न खा खाकर मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा शरीर, मेरा रुधिर, मेरा सर्वस्व दुर्योधन का दास बन गया था। मैं सत्य और धर्म को जानते हुए भी उस मार्ग पर चलने में असमर्थ हो गया था और आज अर्जुन के वाणों ने उस पापमय रूधिर को, अन्न को शरीर से बाहर निकाल दिया है, मैं फिर सत्य समझने, सत्य कहने और सत्य करने के योग्य हो गया हूँ।''

★★★★★

तुम्हारे पास जैसा पैसा आएगा, जैसा अन्न तुम खाओगे, वैसा ही तुम्हारा मन हो जाएगा। दुकान पर बैठकर कम तोलो, घी में चर्बी मिलाकर बेचो, दफ्तर में रिश्वत लो, दवाइयाँ नकली बेचो और प्रातः सायं पूजा करके या नमाज़ पढ़ के या तीर्थयात्रा और हज्ज करके, तुम समझो कि तुम्हारे पाप नष्ट हो जाएंगे? तुम धर्मात्मा हो गए? तुम धोखे में हो, यह आत्मप्रवंचना है, अपने को धोखा देना है।

जो तुमने पहले बोया था वह आज काट रहे हो। जो आज बोओगे वह आगे काटोगे। तुम्हारा जवान बेटा चला गया, तुम्हारे कारीधारी पिता चले गए, तुम्हारी प्यारी पत्नी या पति ईश्वर को प्यारा हो गया, तुम अब भी नहीं समझते ये सब क्या हो रहा है? अब भी दूसरों के स्वत्वहरण में, हेराफेरी में लगे हो। ''कर्म प्रधान विश्व रचिराखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा।''

अपने में साहस बटोरो। मन को दृढ़ बनाओ। घबराओ मत। यदि तुमने अब तक सत्पथ का अवलम्बन नहीं किया है तो भी मत डरो। जब जागे, तभी सवेरा, आज से, अभी से निर्णय कर लो, ठीक मार्ग चुन लो, उस

पर तुरन्त चल पड़ो।

तुम शराब पीते हो। यदि बीस रुपये की भी शराब एक सप्ताह में पी जाते हो तो एक साल में 1040/- की और यदि तीस साल भी पीओ तो तीस साल में 31200/- की शराब पी गए। यदि 31200 को किसी भी बैंक में तीस वर्ष के लिऐ जमा कर देते, तीस वर्ष बाद बैंक तुमको पांच लाख रूपया नगद देता। कौन सा सुख तु न भोग लेते। तुम दो रुपया रोज़ की बीड़ी या सिगरेट पी जाते हो। वर्ष में 730/- का धुँआ उड़ा दिया, तीस वर्ष में 21900/- की सिगरेट पी गए। यदि यह 21900/- किसी बैंक में जमा कर देते तो तीस वर्ष बाद बैंक तुमको साढ़े तीन लाख रूपया नकद देता। गाड़ी भी खरीद लेते और मकान भी बना लेते।

तुम अपनी गरीबी के लिए अपने दु:खों के लिए स्वयं उत्तरदायी हो। क्या तुम्हारे मन में कभी इच्छा नहीं जागी कि तुम्हारा भी सुन्दर सा घर हो? तुम्हारे पास भी गाड़ी हो? तुम्हारे बच्चे भी पढ़ लिखकर कुछ बन जायें?

फिर क्यों नहीं आज से ही शराब छोड़े देते? तुम विश्वास करो शराब और सिगरेट छूटने के साथ तुम्हारा पैसा तो बचेगा ही, तुम्हारा स्वास्थ्य भी सुधरने लगेगा। तुमको नित्य उठने वाला खांसी का दौरा समाप्त हो जायेगा। तुम्हारे घर में सुख शान्ति बढ़ेगी। बच्चे तुम्हारा मान करने लगेंगे। मत समझो ये नन्हे नन्हें बच्चे अभी क्या समझते हैं? जब तुम शराब पीकर लड़खड़ाते हुए घर आते हो, बीवी को गालियाँ देते हो या पीटते हो, तो तुम्हारे मन में तुम्हारे प्रति एक नफरत, एक घृणा, एक तिरस्कार की भावना जन्म लेने लगती है। क्या तुम्हें अच्छा लगता है कि तुम अपने ही बच्चों की नज़र में गिर जाओ?

ग़लत है कि तुम शराब या सिगरेट छोड़ना तो चाहते हो पर छुटती नहीं है। कौन कहता है नहीं छुटती? जिस दिन चाहोगे उसी दिन, एक क्षण में छूट जायेगी। हमें उन सैकड़ों व्यक्तियों का पता है जिन्होंने एक क्षण में छोड़ दी। तुम्हें केवल मन में एक दृढ़ संकल्प करना है। क्या तुम्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं है? उस प्रभु को मन में साक्षी जानकर, संकल्प करके तो देखो। केवल नशेड़ियों की संगत में न बैठना उठना। तुम्हारा संकल्प अवश्य पूरा होगा, सफल होगा।

तुम बीमार हो। तुम्हारा स्वास्थ ठीक नहीं है। चिन्ता मत करो। अपने चिकित्सक से सलाह लो और नियम से, सावधानी से परहेज़ के साथ दवाई लेते रहो। मन में इस धारणा के साथ औषधि लो, ''मैं पहले से स्वस्थ हो रहा हूँ।'' तुम्हारे मन का यह चिन्तन तुम्हें शीघ्र अच्छा कर देगा। डाक्टर जिस काम को एक महीने करता, तुम्हारा यह मानसिक चिन्तन साथ मिल जाने पर तुम 15 दिन में स्वस्थ हो जाओगे।

अमरीका में एक मृत्युदण्ड-प्राप्त कैदी पर तजुर्बा किया गया। उसे कुर्सी पर बैठा दिया गया। डाक्टर कैदी को बैठाकर आपस में बात करने लगे, ''इसकी कमर की एक छोटी सी नस काट देंगे, गरम खून इसके शरीर से रिसकर बहने लगेगा और अधिक से अधिक 30 मिनट में यह मर जायेगा।'' तजुर्बा करने पर वह 30 मिनट से पूर्व ही मर गया परन्तु उसकी कमर की कोई नस नहीं काटी गई, सिर्फ़ इतनी सी पीड़ा दी गई कि वह समझ ले नस काट दी गई है। खून के बजाय खून की गरमी जैसा गरम पानी उसकी कमर से बहाया जाता रहा। मन में अद्भुत शक्ति है। परिणामत: कमज़ोर मन वाला मर गया।

यदि तुम्हें जन्म से एक ही आँख मिली है या एक ही हाथ मिला है, तब तुम समझते क्यों नहीं कि उस दयालु परमात्मा ने तुम्हें सावधान कर दिया है कि अपने को सम्भाल लो। तुम अपने भाग्य के स्वयं विधाता हो। अच्छे कर्म करो कि दोबारा हाथों से या आँखों से वंचित न होना पड़े।

अच्छे काम करने के लिए तुम्हें बहुत अधिक सम्पत्ति या अधिक धन की कतई आवश्यकता नहीं है। जो कुछ तुम्हारे पास ईमानदारी की कमाई है, उसी से सुकर्म शुरू कर दो। नित्य प्रति परोपकार किया करो। दूसरों का हित किया करो। परोपकार की सरलतम विधि का नाम है 'यज्ञ'। आप पूछ सकते हैं कि सवा सौ रुपया किलो का घी आग में डाल कर नष्ट कर देना ठीक है क्या? हमारा निवेदन है - आप को ग़लतफ़हमी हो गई है। हवन में डाला घी नष्ट नहीं होता।

देखो यदि एक तेज़ मिर्च आप खा लें तो क्या होगा? बोले-मेरी नाक से, आँख से, पानी बहने लगेगा। हाल बेहाल हो जाएगा। हाँ, ठीक है ऐसा ही होता परन्तु केवल उसके साथ जो मिर्च खाएगा। तुम उसी मिर्च को स्वयं मत

खाओ उसे जलती हुई अग्नि में डाल दो। तब वही एक मिर्च-सारे मुहल्ले के लिए, सारे क्लास के लिए, सारे दफ्तर के लिए एक मुसीबत का कारण बन जाएगी। सब छींकने लगेंगे, सब की आँखों से पानी बह निकलेगा। अग्नि में डालने से क्या वह मिर्च नष्ट हो गई। वह तो अधिक प्रभावशाली हो गई। केवल मुझ पर ही नहीं, सारे वातावरण पर असर करेगी। इसी प्रकार यज्ञ में डाला घी नष्ट नहीं होता, प्राणीमात्र के लिए पुष्टिकर हो जाता है।

तुम्हारे पास इतना धन नहीं है कि संसार भर के प्राणियों की सहायता कर सको। यदि इतनी सम्पदा आप के पास होती भी तो भी सब तक उसे पहुँचाना असंभव था। जब सहायता करने चलते तो दुश्मन देखते ही ठिठक जाते, उसे देने में संकोच होता ही। परन्तु अपनी ईमानदारी की कमाई से यदि एक तोला अन्न भी तुम निकाल सको, तो एक तोला अन्न को ही सारे संसार के प्राणियों में बांट सकते हो। बांट कर खाने की इसे सर्वोत्तम विधि का नाम ही 'यज्ञ' है।

संस्कृत में 'अग्नि' का एक नाम 'वह्नि' भी है। वह्नि का अर्थ है ले जाना वाला (the carrier) तुम जो कुछ भी अग्नि को दोगे, अग्नि उसे अत्यन्त सूक्ष्म करके प्राणिमात्र को पहुँचा देगी। सब को बाँट देगी।

तेरा साम्यवाद, तेरा समाजवाद, समता के बंटवारे में यज्ञाग्नि के सामने बौना पड़ जायेगा। यज्ञाग्नि में डाली सामग्री हिन्दू, मुसलमान, भारतीय, अभारतीय, दोस्त, दुश्मन, मज़दूर और मालिक सब तक एकरस पहुंचेगी।

यज्ञ कोई मज़हबी रस्म नहीं हैं। प्राणिमात्र का हित और हितचिन्तन करने का एक अचूक, सर्वसुलभ मानवीय साधन है। रोगनाशक औषधियों से उत्पन्न यज्ञधूम जब हमारे बादलों से मिलता है, तो पृथ्वी पर अत्यन्त पुष्टिकर अन्न, शाक, फलों का उत्पादन होता है।

यदि तेरे पास घी नहीं है, हवन-सामग्री नहीं हैं, अन्न नहीं है, केवल समिधाएं ही हैं तो उन समिधाओं से ही यज्ञ कर लिया कर। समिधाएं भी नहीं हैं तो तेरा मन तो तेरे पास है। मन ही मन में आहुतियां दे लिया कर। इसमें तो परेशानी नहीं होनी चाहिए।

एक ग्रामीण ने बड़े चाव से घोड़ा पाल रक्खा था। एक दिन एक अपरिचित आकर बोला बाबा! ये घोड़ा मुझे दे दो। किसान ने कहा कि ये तो

मेरी औलाद है, औलाद बेची नहीं जाती। अपरिचित लौटने लगा धमकी देता गया, "मैं ज़ालिम सिंह डाकू हूँ, जिस चीज़ पर मन आ जाता है उसे लेकर ही रहता हूँ।" किसान भयभीत हो उठा। जिस कमरे में घोड़ा बाँधता, उसके द्वार पर अपनी चारपाई डाल लेता, कोई घोड़ा खोल न ले जाए। तीन चार महीने बीत गए। एक दिन किसान घोड़े पर सवार होकर दूसरे गांव को जा रहा था। रास्ते में एक आदमी भूमि पर चित्त लेटा कंबल में सिकुड़ा पड़ा बुरी तरह कराह रहा था। जैसे ही घोड़ा उसके पास पहुंचा वह गिड़गिड़ाया, "कई दिन से बीमार हूँ। ओ घुड़सवार, यदि मुझे साथ के गावं में डाक्टर तक पहुंचा दे तो आजीवन तेरा एहसान मानूंगा। किसान दयावान था, घोड़े से नीचे उतरा, सहारा देकर बीमार को घोड़े पर चढ़ाया। लेकिन इससे पहले कि किसान स्वयं भी घोड़े पर चढ़ पाता वह बीमार घोड़े पर तन कर बैठ गया। कम्बल फैंक दिया घोड़े को एड़ लगाई। बीस-तीस कदम आगे निकल गया। तब पीछे गर्दन घुमाई और बोला, "देख! मैंने कहा था एक दिन घोड़ा ले जाऊंगा, अब ले जा रहा हूँ।" किसान की आंखों में पानी छलछला आया। बोला, "जालिम! मेरी एक बात सुन लें।" "तू जो चाहे सुना, घोड़ा वापिस नहीं मांगना, वह नहीं दूंगा।" किसान बोला, "ठीक है, मुझे एक वचन दे कि तू किसी को यह नहीं बताएगा कि यह घोड़ा तूने कैसे प्राप्त किया है।" ज़ालिम सिंह! भविष्य में कोई किसी दीन दुखिया बीमार की सहायता करने से कतराएगा, बीमार सड़क पर कराहता मर जाएगा।" किसान कहता हुआ रो पड़ा। परोपकार की इस भावना का नाम है 'मानसिक यज्ञ'। इस भावना को मन में जगा, मानसिक रोग नष्ट हो जायेंगे। ब्लडप्रैशर ठीक हो जायेगा। मन से सुख की धारा फूट निकलेगी। करके तो देख।

तुम मन को मज़बूत बनाओ। मैं मर जाऊंगा, मैं बचूंगा नहीं, ऐसी कल्पना क्यों करते हो? "मैं मैं" मिमयाने में क्या रखा है? रोती शक्ल बनाकर क्यों बैठे हो? एक आदमी के पास रोटियां तो थीं पर साग सब्जी नहीं थी। वह रोटी का टुकड़ा तोड़ता और रोटी के ऊपर हाथ फिराता, ग्रास मुख में डाल लेता और "सी-सी" की आवाज़ करने लगता। साथ वाले यात्री ने पूछा, "भाई साहब, आपके पास सब्ज़ी वगैरह तो है नहीं पर आप ज़ोर से सी सी कर रहे हैं जैसे मिर्चों से मुंह जल रहा हो?" वह बोला, "भाई साहब,

साग सब्ज़ी तो नहीं है, पर मैंने अपने मन में कल्पना कर ली है कि थोड़ी सी सब्ज़ी है, और उसमें भी मिर्चे बहुत अधिक हैं, तभी सी सी कर रहा हूँ।'' पूछने वाले से नहीं रहा गया, बोला, ''बावले! यदि कल्पना ही करनी थी तो घी की करता, मक्खन की करता, रबड़ी की करता, गुलाब जामुन की करता।'' कल्पना भी की तो मिर्च की।''

मैं मर जाँऊगा। मैं बचूंगा नहीं, यह कल्पना क्यों करते हो? कल्पना करो मैं शीघ्र स्वस्थ हो जाऊंगा। मुझे परमपिता परमात्मा ने संसार में अच्छे काम करने के लिए भेजा है। उन पवित्र कर्मों के किये बिना, मैं मरूंगा नहीं। मैं तो यहाँ अस्पताल में पड़ा हूँ। अच्छे से अच्छे चिकित्सक मेरा इलाज कर रहे हैं। जंगल में पशु पक्षी बीमार होते हैं, उनका इलाज कोई नहीं करता। मेरे पास तो डाक्टर है फिर भी मैं क्यों नहीं ठीक हो जाऊंगा? जीवन तुम्हारे कर्मों से जुड़ा है, तुम्हारे भोगों से जुड़ा है, उनसे पहले कैसे समाप्त हो जायेगा?

जिनका मैंने जीवन में अहित किया है, स्वस्थ होकर उनका हित करूंगा। दूसरों के प्रति जलन, ईर्ष्या, द्वेष को मन से निकाल दे। तेरे आधे रोग एक दिन में कट जाएंगे।

दूसरें की बहू-बेटियों पर तेरी वक्र दृष्टि है। देख! तू भी बीवी-बच्चों वाला है। जैसा तू दूसरों की बेटियों को देखकर सोचता है, कल दूसरे जब तेरी माँ, बहिन, बेटी पर बुरी नज़र डालते हैं तो तेरा खून क्यों खौलने लगता है? तेरी आँखों से आग क्यों बरसने लगती है? ये संसार तो गुम्बद की आवाज है। जैसा तू बोलेगा, वही प्रतिध्वनि तू सुनेगा। अपनी आँखों को इतना पावन बना ले कि तेरी आँखो में एक बार झांकने वाले के मन का मैल भी कट जाए। यदि कभी मन में पाप-वासना उठे भी, तो अपनी माँ-बहिन और बेटी को स्मरण कर लिया कर, तेरे समस्त पाप जल जायेंगे। कल्मष धुल जायेंगे।

तुम विद्यार्थी हो। पढ़ाई में जी नहीं लगता। कहाँ लगता है? सिनेमा, नाचघर में? हर वस्तु समय और अपने स्थान पर ठीक होती है। देखो तुमने 1300 रूपये के बढ़िया जूते खरीदे हैं पर रोटी खाते समय उन्हें अपनी थाली में सजाकर रक्खोगे तो पागल कहलाओगे। यह तेरे जीवन-निर्माण का काल है। ब्रह्मचर्य, त्याग कर तपस्या की भट्टी में अपने समस्त शरीर को तपाकर कुन्दन बना ले। विद्या का अर्जन कर ले। जीवन में कितने कष्ट या कठिनाईयां

की कामना है बड़ा बनने की चाहत है, सम्मान की भूख है तो आज इस विद्यार्थी काल में विद्या का भंडार संचित कर ले और अपने शरीर को आने वाले समय के पत्थर सा मज़बूत बना ले। **अश्मा भव, पर्शुर्भव, हिरणयमस्तृतं भव।**

जब तेरा शरीर फ़ौलादी हो जायेगा। ज्ञान के आलोक से जगमगाने लग जायेगा तो विश्व की सारी सम्पदा, सुख, ऐश्वर्य तेरे चरणों में झुक पड़ेंगे। यह विद्यार्थी काल तेरे जीवन की नींव है। इसी आधार शिला पर तेरे भविष्य का महल खड़ा होना है।

तुम्हारे पास बुढ़ापा गुज़ारने के लिए साधन हैं? तो घर में क्यों पड़े हो? बच्चों को उनके हाल पर छोड़ दो, उनके काम में मत दख़ल दो। तुम्हारे बच्चे भी सुखी रहेंगे और तुम भी।

वृद्ध हो गये हो तो क्या? हाथ पैर ही तो नहीं चलते। दौड़ धूप ही तो नहीं कर सकते। पर दूसरों के हित की कामना तो तुम इस अवस्था में भी घर से बाहर रहकर भी कर सकते हो। नित्य प्राणायाम करना शुरू करो। स्वास्थ्य ठीक रहने लगेगा। परमपिता की ओर ध्यान लगेगा। वह ईश्वर आनन्द का भण्डार है, उस ओर बढ़ोगे तो सुख ही सुख, आनन्द ही आनन्द, शान्ति ही शान्ति मिलेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तरांचल

पुस्तक प्रकाशन का समस्त व्यय भार आर्य वस्तु भण्डार, देहरादून ने वहन किया।